(सत) अभिवादन मुद्रायें ।

१. सतयुगी अभिवादन -

सम्माननीय के समक्ष सम्मान पूर्वक मैं पन से खाली पूर्ण विनम्रता युक्त प्रणाम।
"समर्पणमयता"

२. त्रेता युगी अभिवादन षैली-

इश्ट या माननीय के समक्ष पद पंकज में षीष नमन वा दण्डवत प्रणाम।

३. द्वापर युगी नमस्कार-

इश्टदेव या सम्मानीय के समक्ष षिर झुकाकर, झुकी आँखों से बंदन पूजा की मुद्रा में दोनों हाथ जोड़ अपने को कमजोर समझकर नमस्कार।

४. कलियुग में अभिवादन पद्धति-

जिसका अभिवादन करना हो उसके सामने अकड़ कर खड़े हो उल्टे हाथों से सैलूट मारना। या फिर हाथ ऐसे मिलाना जैसे फारमेलिटी निभा रहे हो। या फिर स्वयं को चरणों की धूल समझ दीनहीन मुद्रा दषति मायूस मन से याचना की मुद्रा में या चालू नमस्कार कह कर पीछे कुछ और ही कहना। नमस्कार भी किसी स्वार्थ के लिये ही करना ।

चारों युगों में दाता (देवता) की निषानियाँ

१. सतयुगी आत्माओं की निषानी है-देना देते रहना और देकर भूल जाना।

२. त्रेता युगी आत्माओं की निषानी है-देना लेकिन सूक्ष्म स्मृति कि इसको कभी मैंने कुछ दिया है।

३. द्वापर युगी आत्माओं की निषानी है देना और लेना, जितना देना उतना लेना। जितने का उतना।

४. कलियुगी आत्मायें लेती रहेंगी देना आता ही नहीं। लेते रहना और लेकर भी भूल जाना।

चारों युगों का परिचय

१. सतयुग श्री कृश्ण और श्री राधे वंषी बजाते दिखाये जाते हैं। यह सदा राष करते हुये सुख और अमन चैन की वंषी है।

२. त्रेता युग में श्री राम और श्री सीता बैठे हुये आराम से । यूं लगता है जैसे थककर बैठ गये। संघर्श के बाद सफलता प्राप्त होती है।

३. द्वापर युग में बैठ कर भी मेहनत करते हुये। मेहनत के बाद भी सफलता न मिलने पर सफलता के लिये सदा फरियाद। हैरान होते रहते ।

४. कलियुग में नाक दबाते, सिर के बल खड़े होते, हाथ उठाते पांव भोड़ते यानी जीवन को हर गलियों में गुजारने पर भी सफलता नहीं मिलती। परेषानी ही परेषानी छायी रहती है।